दैनिक भास्कर
जबलपुर | बुधवार, 26 जून, 2013 | 02

भारत में है विश्व का 30 प्रतिशत बांस

जबलपुर। उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान में 24 से 28 जून तक पांच दिवसीय बांस हस्तशिल्प प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय बांस मिशन द्वारा प्रायोजित बीटीएसजी-आईसीएफआरई देहरादून के तत्वावधान में मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ राज्य के 25 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। बांस बरेली (उ.प्र.) से आए प्रशिक्षक नत्थू हुसैन निराले के कुशल मार्गदर्शन में प्रशिक्षणार्थियों को बांस से फर्नीचर, सजावटी सामान, घरेलू उपयोग का सामान बनाना सिखाया जायेगा। प्रशिक्षण में विशेष तौर पर उन औजारों के उपयोग पर प्रकाश डाला जाएगा, जिनके उपयोग से सामान की सुंदरता एवं बाजार मूल्य बढ़ता है। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि भावसे डॉ. यू प्रकाशम ने किया। उन्होंने बताया कि विश्व का 30 प्रतिशत बांस भारत में पाया जाता है, लेकिन 4 प्रतिशत बांस का ही उपयोग हो पाता है। कार्यक्रम में समूह समन्वयक डॉ. एसए अंसारी द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। पी-4

स्वतंत्र मत जबलपुर

राष्ट्रीय बांस मिशन द्वारा

कारीगरों एवं किसानों को विशेष प्रशिक्षण

बांस पर्यावरण हितैषी और आय का साधन

जबलपुर,डेस्क

उष्ण कटिबधीय वन अनुसंधान जबलपुर में 05 दिवसीय बांस हस्तशिल्प प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय बांस मिशन द्वारा प्रायोजित देहरादून के तत्वावधान में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य के 25 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। बांस बरेली (उ.प्र.) से पधारे प्रशिक्षक नत्थू हुसैन एवं निराले जी के कुशल मार्गदर्शन में प्रशिक्षणार्थियों को बांस से फर्नीचर, सजावटी समान, घरेलू उपयोग का समान आदि बनाना सिखाया जायेगा। श्री हुसैन द्वारा विशेष तौर पर उन औजारों के उपयोग पर प्रकाश डाला जाएगा, जिनके उपयोग से समान की सुन्दरता (फिनिशिंग) एवं बाजार मूल्य बढ़ता है। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि निदेशक डॉ.यू.प्रकाशम (भा.व.से) ने अपने उद्बोधन में कहा कि बांस जब जंगल में होता है तो पर्यावरण के हित में कार्य करता है तथा कटने के बाद आर्थिक आय का साधन बनता है। भारत में विश्व का 30 प्रतिशत बांस पाया जाता है, परंतु हम केवल 4 प्रतिशत बांस से ही आमदनी बढ़ाने के सामान जैसे फर्नीचर, सजावटी सामान, घरेलू उपयोग का सामान बना पाते हैं। इसलिए राष्ट्रीय बांस मिशन बांस का उत्पादन क्षेत्र बढ़ाने, प्रशिक्षण द्वारा बांस से बनी सामग्री की गुणवत्ता सामग्री तैयार करना तैयार सामग्री की पैकिंग आदि का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। उद्घाटन के अन्त में डॉ.एस.ए.अन्सारी, समूह अमन्वयक, द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया एवं कार्यक्रम का संचालन, डॉ.नितिन कुलकर्णी, प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग द्वारा किया गया। संयोजकों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार प्रशिक्षण के दौरान बनाई गई वस्तुओं की एक प्रदर्शनी 28 जून तक लगाई जायेगी।

WEDNESDAY ■ JUNE 26 ■ 2013 ■ JABALPUR, The Hitavada

Five-day bamboo handicraft training begins at TFRI

■ Staff Reporter

A FIVE-DAY bamboo handicraft training was inaugurated at Tropical Forest Research of Institute (TFRI) on Monday. The training is organised under the banner of BTSG-ICFRE, Dehradun, which is sponsored by National Bamboo Mission. A total 25 participants from Madhya Pradesh and Chhattisgarh are participating in the training programme.

Chief guest on the occasion was Director Dr U Prakasham. He inaugurated the training programme by lighting the traditional lamp.

Speaking on the occasion, Dr Prakasham said that when bamboo was growing in forest areas, it could be beneficial for environment. After cutting from forest it becomes source of income. He added 30 per cent bamboo of world is available in India. But, we can utilise only 4 per cent of bamboo in form of furniture, decorative items, domestic use. Its a need that extension for bamboo market should be carried out, so that it also increase the source of income. With this aim, National Bamboo Mission is conducting the training programme for extending the production field of bamboo and its market also. He informed that the beautiful, quality based material could be prepared through bamboo by using modern equipment. During the training, experts would impart proper training for making items from bamboo and its attractive packaging.

Participants preparing items through bamboo during training.

Training is being imparting under the guidance of trainer from Bamboo Bareli (Uttar Pradesh), Natu Hussain and Nirale. Training is being imparted for making furniture, decorative items, domestic use. Along with this, experts also informed about use of modern techniques. With the help of modern tools, more finishing would be possible, and it will raise the price of product. The programme was convened by Dr Nitin Kulkarni, HoD, Forest Extension Department, and a vote of thanks was proposed by Dr S A Ansari.

जबलपुर, मंगलवार 25 जून 2013 देशबन्धु

टीआफआरआई में राष्ट्रीय बांस मिशन पर कार्यशाला

जबलपुर, देशबन्धु। उष्ण कटिबंधीय बन अनुसंधान में 24 से 28 जून तक 5 दिवसीय बाँस हस्तशिल्प प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय बाँस मिशन द्वारा प्रायोजित एवं देहरादून के तत्वाधान में मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य के 25 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे है। बांस बरेली (उप्र) से पधारे प्रशिक्षक नत्थू हुसैन एवं श्री निराले के कुशल मार्गदर्शन में प्रशिक्षणार्थीयों को बाँस फर्नीचर, सजावटी समान, घरेलू उपयोग का समान आदि बनाना सिखाया जायेगा। श्री हुसैन द्वारा विशेषतौर पर उन औजारों के उपयोग पर प्रकाश डाला जाएगा। समारोह के मुख्य अतिथि निदेशक डायू प्रकाशम (भावसे)ने अपने उदबोधन में कहा कि बाँस जब जंगल में होता है तो पर्यावरण के हित में कार्य करता है तथा कटने के बाद आर्थिक आय का साधन बनता है। भारत में विश्व का 30 प्रतिशत बाँस पाया जाता है। परंतु हम केवल 4 प्रतिशत बाँस से ही समान, का समान बना पाते है। उद्घाटन के अन्त में डा. एसए अन्सारी, समूह अमन्वयक द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया एवं कार्यक्रम का संचालन, डॉ. नितिन कुलकर्णी, प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग द्वारा किया गया। संयोजको द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार प्रशिक्षण के दौरान बनाई गई वस्तुओं की एक प्रदर्शनी प्रस्तावित हैं।

नव भारत
जबलपुर
मंगलवार , 25 जून , 2013

टीएफआरआई में राष्ट्रीय बांस मिशन पर पांच दिनी कार्यक्रम

जबलपुर, 24 जून, नभाप्र. उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान आज से 28 जून तक 05 दिवसीय बांस हस्तशिल्प प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ. राष्ट्रीय बांस मिशन द्वारा प्रायोजित बी.टी.एसजी आई सी एफ आर ई देहरादून के तत्वाधान में मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य के 25 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे है.

कारीगरों एवं किसानो को बांस हस्तशिल्प पर विशेष प्रशिक्षण

बांस बरेली (उ.प्र.) से पधारे प्रशिक्षक नत्थू हुसैन एवं श्री निराले मार्ग दर्शन में प्रशिक्षाणार्थीयोंक को बांस से फर्नीचर सजावटी समान घरेलू उपयोग का समान आदि बनाना सिखाया जायेगा. श्री हुसैन द्वारा विशेषतौर पर उन औजारों के उपयोग पर प्रकाश डाला जायेगा. जिनके उपयोग से समान की सुन्दरता (फिनिशिंग) एवं बाजार मूल्य बढ़ता है. उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि निदेशक डा.यू. प्रकाशम (भा.व.से.) ने अपने उदबोधन में कहा कि बांस जब जंगल में होता है तो पर्यावरण के हित में कार्य करता है तथा कटने के बाद आर्थिक आय का साधन बनता है. भारत में विश्व का 30 प्रतिशत बांस पाया जाता है. परंतु हम केवल 4 प्रतिशत बांस से ही आमदनी बढ़ाने के समान जैसे फर्नीचर, सजावटी समान, घरेलू उपयोग का समान बना पाते है. इसलिये राष्ट्रीय बांस मिशन बांस का उत्पादन क्षेत्र बढ़ाने प्रशिक्षण द्वारा बनी सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाने और बांस का बाजार बढ़ाने के लिये संकल्पित है. आधुनिक हथियारों से बांस की सुन्दर टिकाऊ एवं गुणवत्ता सामग्री तैयार करना तैयार सामग्री की पैकिग आदि का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है. उद्घाटन के अंत में डॉ. एस.ए. अंसारी समूह अमन्वयक द्वारा आभार प्रदर्शन किा गया. संयोजको द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार प्रशिक्षण के दौरान बनाई गई वस्तुओं की एक प्रदर्शनी 28 जून को प्रस्तावित है.